भारतीय अमेरिकी मतदाता

केटलिन फेन्नरटी

अमेरिका के राष्ट्रपति चुनावों में सभी आयु वर्ग के भारतीय अमेरिकी प्रचार अभियान में सक्रिय।

एशिया में जन्मे लोगों को अमेरिकी नागरिक बनने से रोकने वाले एक कानून को निरस्त करवाने के कड़े संघर्ष के बाद 1956 में दलीप सिंह सौंद अमेरिकी कांग्रेस के लिए चुने जाने वाले पहले भारतीय अमेरिकी बने थे। आज भारतीय अमेरिकी अमेरिकी राजनीति का एक महत्वपूर्ण घटक बन चुके हैं। अमेरिका के 30 करोड़ नागरिकों में भारतीय अमेरिकियों की संख्या भले ही कुल 25 लाख हो लेकिन उनका राजनीतिक प्रभाव बढ़ रहा है।

मैनहट्टन में लोकसेवा से जुड़ी और सामाजिक रूप से सक्रिय मीरा गांधी मानती हैं कि भारतीय समुदाय को अब समझ में आ चुका है कि उसे राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल होना होगा। उन्होंने न्यू यॉर्क सन को बताया, ''अब हम एक समृद्ध समाज हैं। हमें लगता है कि देश की राजनीति से हमारा जुड़ाव होना चाहिए।'' 2007 में रिपब्लिकन कांग्रेस सदस्य बॉबी जिंदल लुइज़ियाना के गवर्नर चुने गए, राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी के नामांकन की दौड़ में सेनेटर हिलैरी क्लिंटन के अभियान के दौरान उनकी वरिष्ठ नीति सलाहकार रही मीरा टंडन अब बाराक ओबामा की घरेलू नीति निदेशक हैं, और हॉलीवुड अभिनेता कल्पेन मोदी जो काल पेन के नाम से प्रसिद्ध हैं, अपने कामकाज को एक तरफ करके ओबामा का प्रचार कर रहे हैं।

आश्चर्य नहीं कि डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन, दोनों दल भारतीय अमेरिकी मतदाताओं से सम्पर्क साध रहे हैं। वाशिंगटन, डी.सी. की यू.एस. इंडिया पॉलिटिकल एक्शन कमिटी के अध्यक्ष संजय पुरी कहते हैं, ''भारतीय अमेरिकी समुदाय बहुत सम्पन्न, सुशिक्षित और सार्वजनिक जीवन और अमेरिकी राजनीतिक प्रक्रिया में बहुत सक्रिय है।'' इस समूह का अंदाजा है कि मौजूदा राष्ट्रपति चुनाव में भारतीय अमेरिकी 2 करोड़ डॉलर का योगदान करेंगे। बहुत से भारतीय अमेरिकी दोनों राजनीतिक दलों के धन जुटाने के प्रयासों में सक्रिय हैं। क्लिंटन और ओबामा के चुनाव अभियानों पर कैलिफ़ोर्निया की सिलिकॉन वैली के करीब तीन लाख भारतीय अमेरिकियों का महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है। न्यू यॉर्क के होटल व्यवसायी सन्त चटवाल ने अमेरिकन इंडियन्स फॉर हिलैरी 2008 का गठन किया और उनके चुनाव अभियान को सफल बनाने के लिए लाखों डॉलर की राशि जुटाई। राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी के नामित प्रत्याशी पद की दौड़ में बाराक ओबामा की जीत के बाद चटवाल ने उनके लिए एक करोड़ डॉलर जुटाने का संकल्प लिया है।

साभार: सुरभि गर्ग/ यूएसआइएनपीएसी

सेट सेलेस © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

ऊपर: यू.एस. इंडिया पॉलिटिकल एक्शन कमिटी की सुरभि गर्ग शिकागो, इलिनॉय में धन जुटाने के दौरान मिशेल ओबामा के साथ।

ऊपर दाएं: अभिनेता काल पेन (दाएं) डेनवर, कोलोरैडो में डेमोक्रेटिक नेशनल कन्वेंशन के दौरान संचालन का ज़िम्मा संभालते हुए।

राजनीतिक रूप से जागृत भारतीय अमेरिकियों की पहली पीढ़ी की संतानें- आव्रजन की महत्वपूर्ण लहर 60 के दशक में शुरू हुई थी- भविष्य में भी प्रभाव डालेंगी। अमेरिकी जनगणना विभाग के अनुसार आधे एशियाई अमेरिकी 29 बरस से कम आयु के हैं और इनमें से भारतीय अमेरिकी सबसे तेज़ी से बढ़ रहा जातीय समूह है जिसकी वार्षिक वृद्धि दर 10.3 प्रतिशत है। 18 से 30 बरस के आयु वर्ग के मतदाताओं की संख्या 5 करोड़ यानी कुल मतदाताओं की संख्या की 25 प्रतिशत है।

वरिष्ठ समाचार विश्लेषक और नेशनल पब्लिक रेडियो के टिप्पणीकार डैनियल शॉर ''रोमांचित'' हैं कि इस बार के चुनाव में पहले से कहीं अधिक युवाओं ने मतदान की इच्छा जताई है। शॉर कहते हैं कि इस बार प्राइमरी चुनावों में युवा मतदाताओं का अधिक संख्या में मतदान करना ''एक महत्वपूर्ण नया तथ्य है।'' वह कहते हैं कि युवाओं के मत निर्णायक सिद्ध हो सकते हैं। सर्वेक्षणों से पता चला है कि ज़्यादा युवा मतदाताओं का रुझान रिपब्लिकन प्रत्याशी जॉन मैक्केन के बजाय डेमोक्रेटिक पार्टी के बाराक ओबामा की ओर है।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

इंडियन अमेरिकन फ़ोरम फ़ॉर पॉलिटिकल एजुकेशन

http://www.iafpe.org/

यू.एस. इंडिया पॉलिटिकल एक्शन कमेटी

http://www.usinpac.com/

भारतीय अमेरिकी ऐतिहासिक रूप से रिपब्लिकन की बजाय डेमोक्रेटिक प्रत्याशियों के पक्ष में मतदान करते रहे हैं। लेकिन अब स्थिति बदल रही है। फ़रवरी 2008 में इंडिया एब्रॉड ने लिखा कि 60 प्रतिशत भारतीय अमेरिकी जहां अब भी डेमोक्रेटिक हैं, वहीं 40 प्रतिशत भारतीय अमेरिकी रिपब्लिकन खेमे से जुड़े हैं जो आज तक इस दल के भारतीय अमेरिकी समर्थकों की सबसे बड़ी संख्या है। रिपब्लिकन इस जातीय समूह का समर्थन जुटाने का कोई मौका नहीं चूकना चाहेंगे। नेशनल रिव्यू के वरिष्ठ संपादक जे नॉर्डलिंगर ने हाल ही में इस

एल.एम. ओटेरो © ए पी/ डब्ल्यू डब्ल्यू एन.

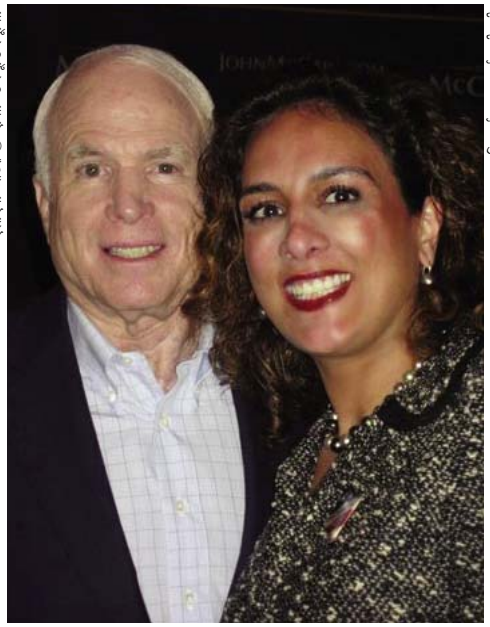

साभार: सुरभि गर्ग/ यूएसआईएनसीएसी

ऊपर बाएं: लुइजियाना के गवर्नर बॉबी जिंदल केनर, लुइजियाना में जॉन मैक्केन के लिए प्रचार करते हुए। ऊपर: 13वें असेम्बली डिस्ट्रिक्ट से कैलिफ़ोर्निया राज्य विधानमंडल के लिए रिपब्लिकन उम्मीदवार हरमीत ढिल्लों मैक्केन के साथ।

पाक्षिक में लिखा ''भारतीय अमेरिकी उद्यमी, मेहनती, लगनशील, परम्परावादी, परिवारप्रेमी, धार्मिक, समन्यवादी, देशभक्त हैं- इससे बेहतर क्या हो सकता है ? और उनके मुद्दे क्या हैं ? वे व्यवसाय-व्यापार समर्थक, कम करों वाली नीति और मुक्त व्यापार के समर्थक हैं जिसमें खासी रक्षा सम्बन्धी आउटसोर्सिंग भी शामिल है।'' नॉर्डलिंगर कहते हैं कि ये सभी मुद्दे रिपब्लिकन पार्टी के नीति घोषणापत्र में शामिल हैं।

जॉर्जिया में डेमोक्रेटिक पार्टी के शुरुआती धन जुटाने वालों में से एक और भारतीय अमेरिकियों में राजनीतिक सक्रियता प्रेरित करने को समर्पित संस्था इंडियन-अमेरिकन फ़ोरम फ़ॉर पॉलिटिकल एजुकेशन के अध्यक्ष नरेन्दर रेड्डी कहते हैं कि पहली पीढ़ी के 95 प्रतिशत मतदाता तो परंपरा के तौर पर डेमोक्रेटिक पार्टी को ही मत देते थे, ''मैं दूसरी पीढ़ी में बदलाव देख रहा हूं- वे रिपब्लिकन पार्टी से परहेज नहीं रखते। मुझे तो लगता है कि उनमें से कम से कम 30 प्रतिशत रिपब्लिकन पार्टी के पक्ष में मतदान करेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि दूसरी पीढ़ी के लोगों की संख्या जैसे-जैसे बढ़ेगी, वैसे-वैसे भारतीय अमेरिकियों का दोनों दलों को समर्थन संतुलित होता चला जाएगा।''

यू.एस. इंडिया पॉलिटिकल एक्शन कमिटी के पुरी कहते हैं कि इस चुनाव में ऐतिहासिक रूप से मतदान से दूर ही रही दूसरी पीढ़ी आगे आई है, ''मुझे लगता है कि यह सेनेटर ओबामा के कारण हुआ है जिन्होंने दूसरी पीढ़ी के भारतीय अमेरिकियों को आकर्षित किया है। उन्होंने बहुत से दूसरे समुदायों के युवाओं को भी आकर्षित किया है। युवाओं पर उनका आकर्षण ज़बर्दस्त ढंग से काम करता है।''

सहस्राब्दि युवा- 30 वर्ष से कम आयु के मतदाता- इतिहास की सबसे अधिक विविधतापूर्ण अमेरिकी पीढ़ी हैं, इनमें से लगभग 40 प्रतिशत अपनी गिनती अल्पसंख्यकों में करते हैं। अटलांटा, जॉर्जिया की एमॉरी यूनिवर्सिटी की 19 वर्षीया नताशा लाल कहती हैं, ''मुझे बाराक ओबामा इसलिए पसन्द हैं कि वह अपेक्षाकृत कमतर वर्ग से हैं। वह समृद्ध, श्वेत परिवार के नहीं हैं। मैं तो खुद भी अल्पसंख्यक वर्ग से हूं तो यह सोचकर अच्छा लगता है कि इस देश में कुछ भी सम्भव है।''

एमॉरी यूनिवर्सिटी के ही 22 वर्षीय अर्जुन सेठ को लगता है कि ओबामा मैक्केन से ज़्यादा विश्वनीय लगते हैं, ''और खास बात यह है कि वह इंडोनेशिया में रहे हैं और इसलिए किसी नीति को सिर्फ अमेरिका के ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से देख पाएंगे।''

लेकिन कैलिफ़ोर्निया के क्लेयरमोंट मैक्केन्ना कॉलेज के 21 वर्षीय राघव धवन मैक्केन के पक्ष में मन बना चुके हैं। वह इराक युद्ध और व्यापार को लेकर चिन्तित हैं। वह मानते हैं कि ये मुद्दे विश्व से अमेरिका के सम्बन्धों से गहराई से जुड़े हैं और मैक्केन इन सम्बन्धों को मज़बूत बनाएंगे। राघव कहते हैं, ''आव्रजन को लेकर उनका रुख सहानुभूतिपूर्ण है और ग्लोबल वार्मिंग पर भी वह मध्यमार्गी हैं। वह मानते हैं कि आउटसोर्सिंग मुक्त बाज़ार शक्तियों का सहज परिणाम है। वह परमाणु संधि पर बुश की ही नीति पर बने रहेंगे।''

यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेन्सिलवैनिया के छात्र जय राघवन की ही तरह कई लोग दोनों प्रत्याशियों को अलग-अलग मुद्दों पर सशक्त पाते हैं। उन्हें इराक पर ओबामा का रुख पसन्द है तो व्यापार और अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर मैक्केन का।

भारतीय अमेरिकी युवा सिर्फ अपनी राय ही नहीं जता रहे हैं, वे राजनीति में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं, धन संग्रह कर रहे हैं, अभियानों से जुड़ रहे हैं और स्वंयसेवक बन रहे हैं। टफ़्ट्स यूनिवर्सिटी, मैसाच्यूसेट्स के सेंटर फ़ॉर इन्फ़ॉर्मेशन एंड रिसर्च ऑन सिविक लर्निंग एंड एंगेजमेंट द्वारा संग्रहीत आंकड़े बताते हैं कि युवाओं में भारतीय अमेरिकी सबसे अधिक राजनीतिक रूप से सक्रिय जातीय समूह है। वर्ष 2006 में 54 प्रतिशत युवा एशियाई अमेरिकी स्वंयसेवकों के रूप में कार्यक्रमों से जुड़े थे। इसके अतिरिक्त वर्ष 2004 में 18 से 29 बरस के आयु वर्ग के 33 प्रतिशत से अधिक एशियाई अमेरिकी नागरिकों ने मतदान किया जो 1972 (जब मतदान के आंकड़े इस तरह संग्रहीत किए जाने लगे) के बाद का एशियाई अमेरिकियों के मतदान का सबसे बड़ा रिकॉर्ड था।

राजनीतिक रूप से जागरूक पहली पीढ़ी ने अपने बच्चों को राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल होने के महत्व समझा दिया है। कांग्रेशनल कॉकस ऑन इंडिया एंड इंडियन अमेरिकन्स और हाउस सब-कमिटी ऑन मिडिल ईस्ट एंड साउथ एशिया के सदस्य फ़्लोरिडा के कांग्रेसमैन गस बिलिराकिस कहते हैं, ''विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के सदस्य होने के कारण भारतीय लोगों का लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने का लम्बा इतिहास है और वह अपने मत की कीमत खूब जानते हैं। और जब अमेरिका के अगले राष्ट्रपति के चुनाव में भागीदारी की बात आती है तो भारतीय अमेरिकी भारत में अपने पूर्वजों और अमेरिका में अपने घर के देश की दोहरी विरासत को आगे बढ़ाते हैं।''

***केटलिन फेन्नरटी** ने यह लेख नई दिल्ली स्थित अमेरिकन सेंटर में पब्लिक अफ़ेयर्स इंटर्न के तौर पर काम करते हुए लिखा। इस लेख के लिए शोध में अबिगेल थॉर्नहिल ने योगदान दिया है।*